AANKHON KA TARA (HINDI)

हिस्सा 1

फ़ैज़ाने सुन्नत की म-दनी बहारें

आंखों का तारा

मअ़ 14 म-दनी बहारें

- सआ़दतों की मे'राज 6
- मुरझाई कलियां खिल उठीं 15
- आंखें अश्क बरसाती रहीं 23
- इस्लामी ज़िन्दगी की राहनुमा तहरीर 13
- तारीकी के बादल छट गए 20
- गुलशने हयात को शादाब कर दिया 27

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

आंखों का तारा

येह रिसाला **(आंखों का तारा)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के बाब **''ग़ीबत की तबाह कारियां'' सफ़ह़ा 301** पर ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़तशम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है ''जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा।''

(مجمع الزوائد ج ١٠ ص ٢٥٣ حديث ١٧٢٩٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत एक ऐसा अ़ज़ीमुश्शान काम है कि जिस के लिये **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला मुख़्तलिफ़ अदवार में मुख़्तलिफ़ अम्बियाए किराम व रुसुले इ़ज़ाम

عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाता रहा। ह़त्ता कि **ख़ा-तमुन्नबिय्यीन**, साह़िबे क़ुरआने मुबीन, **मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन**, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया और आप पर सिल्सिलए नुबुव्वत ख़त्म फ़रमा दिया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द येह ज़िम्मादारी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत बिल ख़ुसूस उ़-लमाए किराम के ह़वाले कर दी गई। जैसा कि **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान** में फ़रमाते हैं "ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने से ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام तक मु-तवातिर अम्बिया आते रहे उन की ता'दाद चार हज़ार बयान की गई है येह सब ह़ज़रात शरीअ़ते मू-सवी के मुह़ाफ़िज़ और उस के अह़काम जारी करने वाले थे चूंकि ख़ा-तमुल अम्बिया के बा'द नुबुव्वत किसी को नहीं मिल सकती इस लिये शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह की ह़िफ़ाज़त व इशाअ़त की ख़िदमत रब्बानी उ़-लमा और मुजद्दिदीने मिल्लत को अ़ता हुई।"

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 1, सू-रतुल ब-क़रह, आयत : 87, सफ़ह़ा : 24)

नेकी की दा'वत देने वालों की काम्याबी की ज़मानत तो ख़ुद क़ुरआन ने दी है जैसा कि पारह 4, सूरए आले इ़मरान आयत 104 में इर्शाद होता है :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ.

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे ।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن मज़्कूरा आयत के तह़्त **''नूरुल इ़रफ़ान''** में तह़रीर फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि तब्लीगे़ दीन करने वाला आ़लिम बहुत काम्याब है ।

(नूरुल इ़रफ़ान, सफ़ह़ा : 99, मत़्बूआ़ पीर भाई कम्पनी मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

ह़ज़रते मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे येह ख़बर पहुंची है कि क़ियामत के दिन उ़-लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से अम्बिया عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रह़ तब्लीगे़ दीन के बारे में पूछा जाएगा ।

(حلیۃالاولیاء حدیث ۸۸٦۹ ج٦ ص۳٤۸ دارالکتب العلمیہ بیروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम तारीख़े इस्लाम की वरक़ गर्दानी करें तो हम पर येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ इ़यां हो जाती है कि हमारे उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰه تَعَالٰی ने हर दौर में एह़याए सुन्नत व नेकी की दा'वत के इस फ़रीज़े को ख़ूब सर अन्जाम दिया । माज़ी के अवराक़ पर अगर हम नज़र करें तो हर दौर

में उ़-लमाए इस्लाम चांद सितारों की मानिन्द चमक्ते नज़र आते हैं। कहीं इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم इ़ल्मे दीन की रा'नाइयां बिखेरते हैं तो कहीं ग़ौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق नूरे इ़ल्म से क़ुलूब को मुनव्वर करते हैं। कहीं इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى तल्क़ीने उम्मते मुस्लिमा में मसरूफ़ हैं तो कहीं इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن लोगों के दिलों में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्एं जलाते हैं। अल ग़रज़ इन मुक़द्दस हस्तियों ने तक़रीर, तस्नीफ़, तह़रीर, तदरीस, नेकी की दा'वत वग़ैरा के ज़रीए अपनी अपनी ज़िम्मादारी को ख़ूब निभाया। आज भी उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى नेकी की दा'वत के इस फ़रीज़े को बख़ूबी सर अन्जाम दे रहे हैं। इन्ही उ़-लमा में शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तह़रीर व तक़रीर के ज़रीए नेकी की दा'वत को ख़ूब आ़म किया जिस के नतीजे में लाखों लोग जुर्म व इ़स्यां की दुन्या को छोड़ कर क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमात के पाबन्द बन गए। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जहां बयानात के ज़रीए नेकी की दा'वत को आ़म किया वहीं आप ने तह़रीर के ज़रीए भी नेकी की दा'वत के डंके बजाए यूं तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ात व तस्नीफ़ात काफ़ी हैं। लेकिन इन में **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** को एक इम्तियाज़ी ह़ैसिय्यत ह़ासिल है। इसी किताब से दुन्या भर की बे शुमार मसाजिद, घरों, बाज़ारों और

दीगर मक़ामात में रोज़ाना बे शुमार इस्लामी भाई दर्स दे कर नेकी की दा'वत के पैग़ाम को आ़म करते हैं। इस का मुत़ा-लआ़ कर के इ़ल्मे दीन सीखने और इस की ब-र-कतें लूटने वालों की ता'दाद तो बहुत ज़ियादा है। मुल्क व बैरूने मुल्क से बे शुमार इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का मुत़ा-लआ़ करने की ब-र-कत से अपने दिल में बरपा होने वाले म-दनी इन्क़िलाब की म-दनी बहारें तह़रीरी सूरत में भेजते रहते हैं। दा'वते इस्लामी की मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** फ़ैज़ाने सुन्नत की इन म-दनी बहारों की पहली क़िस्त़ "**आंखों का तारा**" के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है।

अल्लाह तआ़ला हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

10 जुमादल ऊला सि. **1431** हि., **25** एप्रिल सि. **2010** ई.

﴾1﴿ सआ़दतों की मे'राज

पाक पतन (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मेरी बद क़िस्मती कि बचपन ही से मुझे बुरी सोह़बत मुयस्सर आई, **बद मज़्हबों के साथ न सिर्फ़ मेरे तअ़ल्लुक़ात उस्तुवार थे** बल्कि मेरी पोज़ीशन निहायत ही मुस्तह़कम थी। वोह यूं कि उन्ही के मद्रसे से ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की तक्मील के बा'द एक साल तक मुदर्रिस की ह़ैसिय्यत से क़ुरआने पाक की ता'लीम देता रहा **नीज़ बद मज़्हबों की एक सियासी तन्ज़ीम में तह़सील सत़ह़ पर जनरल सेक्रेटरी की ह़ैसिय्यत से तन्ज़ीमी काम भी करता रहा येही वजह थी कि अहले सुन्नत से बुग़्ज़ व अ़दावत और उन से बिला वजह लड़ाई झगड़ा मोल लेता था।** बद अ़क़ी-दगी के साथ साथ मैं बद आ'माली का शिकार भी था फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने में कोई नंगो आ़र (शर्म व ग़ैरत) मह़सूस न करता था। बद अ़क़ी-दगी की आलू-दगियों से पाकीज़गी का ज़रीआ़ कुछ यूं मुयस्सर आया कि एक मरतबा हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से मुझे शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" पढ़ने का मौक़अ़ मिला जब मैं ने उस का मुत़ा-लआ़ किया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक वलिय्ये कामिल के पुर

तासीर और महब्बत भरे अल्फ़ाज़ मेरे दिल में तासीर का तीर बन कर पैवस्त होते चले गए और **इश्क़े मुस्तफ़ा की शम्अ़ से मेरे दिल का हर तारीक गोशा मुनव्वर हो गया** मुझ पर मज़्हबे अहले सुन्नत की हक़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ हो गई मैं बद मज़्हबों की सोह़बत छोड़ कर तौबा कर के दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में बैअ़त भी हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वाबस्तगी के बा'द मेरे नसीब को चार चांद लग गए, एक रात मैं सोया तो मेरे ख़्वाब में **सरवरे काएनात, साह़िबे मो'जिज़ात** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **तशरीफ़ लाए, मैं ने हुज़ूर ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **के दीदार के जाम भर भर के पिये और अपनी आंखों की प्यास बुझाई।** मेरी सआ़दत की मे'राज कि मैं ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दस्त बोसी का शरफ़ भी पाया। **अब मेरे घर के तमाम अफ़राद अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के मुरीद हो चुके हैं। अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ आंखों का तारा

ज़ियाकोट (सियाल कोट, पंजाब) के एक इस्लामी भाई

के बयान का ख़ुलासा है : बचपन ही से मैं वालिदैन और अहले ख़ाना की आंखों का तारा और उन का इन्तिहाई लाडला और प्यारा था **: उन के बे जा लाड प्यार का नतीजा येह निकला कि इस क़दर ख़ुदसर हो गया कि हर छोटे बड़े से बद अख़्लाक़ी करता,** यूं मैं दिन ब दिन बिगड़ता गया। पढ़ाई से मेरी दिलचस्पी ख़त्म हो गई और मैं **ला या'नी** (फ़ुज़ूल) कामों में मश्ग़ूल हो गया। फ़िल्मों डिरामों में ह़यासोज़ इ़श्क़िया व फ़िस्क़िया मनाज़िर ने मेरे किरदार और अख़्लाक़ियात को मु-तअस्सिर कर दिया था। बुलन्द आवाज़ में म्यूज़िक सुनता और वोह मूसीक़ी जो दर ह़क़ीक़त जिस्म व जां के लिये ज़हरे क़ातिल और बाइ़से अ़ज़ाबे आख़िरत है مَعَاذَاللّٰه उसे रूह़ की ग़िज़ा समझता था, इ़लावा अज़ीं सोह़बते बद ने आ-तशे इ़स्यां (गुनाहों की आग) पर तेल छिड़क्ने का काम किया घर वालों ने लाख समझाया मगर मुझ पर उन की कोई पन्दो नसीह़त कारगर न हुई और मैं जूं का तूं अफ़्आ़ले शनीआ़ व क़बीह़ा (बुरे कामों) का इरतिकाब करता रहा। जब भी कोई नई फ़िल्म आती उसे देखने सिनेमा घर पहुंच जाता और ह़यासोज़ मनाज़िर देख कर अपनी आंखों को जहन्नम की आग से पुर करने का सामान करता। मुख़्तसर येह कि मैं सर ता पा गुनाहों के समुन्दर में मुस्तग़रक़ था मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से मेरी क़िस्मत ने या-वरी की और मुझे दा'वते इस्लामी का पाकीज़ा माह़ोल मुयस्सर आ गया।

हुवा कुछ यूं कि एक रोज़ मेरे बड़े भाईजान एक किताब बनाम **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** ले कर घर लौटे, टाइटल पेज की कशिश ही कुछ ऐसी थी कि मेरी तवज्जोह उस की जानिब मब्ज़ूल हो गई चुनान्चे मैं ने किताब उठा कर पढ़ना शुरूअ़ कर दी, जैसे जैसे मैं पढ़ता गया म-रज़े इ़स्यां (गुनाहों की बीमारी) का मदावा होता गया, एक वलिय्ये कामिल की तह़रीर ने मेरे अन्दर इन्क़िलाब बरपा कर दिया मुझे अपने अख़्लाक़ व किरदार को निखारने का ज़ेह्न मिला। बिल आख़िर मैं ने अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की और ख़ुद को म-दनी माह़ोल में ढाल लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब हमारा पूरा ख़ानदान दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता है और ता दमे तह़रीर मैं अ़लाक़ा मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़े अ़मल हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ दिल का मैल दूर हो गया

कर्नाटक (हिन्द) के मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब पेशे ख़िदमत है : येह उन दिनों की बात कि जब हम दा'वते इस्लामी के तह़ूत होने वाले **"तरबिय्यती कोर्स"** में सुन्नतों की तरबिय्यत ह़ासिल कर रहे थे **"अ़लाक़ाई दौरा बराए**

नेकी की दा'वत'' के सिल्सिले में एक मस्जिद जाना हुवा, सुन्नतों भरे बयान के बा'द इन्फ़िरादी कोशिश का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो मेरी मुलाक़ात एक ऐसे नौ जवान से हुई जो अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की ह़क़्क़ानिय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ तरद्दुद का शिकार था। उस नौ जवान ने हमें अपने घर चलने की दा'वत पेश की तो हम उस की दा'वत पर **लब्बैक** कहते हुए उस के घर पहुंचे वहां येह देख कर बड़ा सदमा हुवा कि उस के पास बद मज़्हबों की भी कई किताबें थीं मेरे दिल में उस के लिये कुढ़न पैदा हुई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हुए मैं ने दिल में येह निय्यत की, कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने इस इस्लामी भाई को बद मज़्हबों के चुंगल से आज़ाद कराऊंगा चुनान्चे मैं ने उस से पूछा क्या आप के पास फ़ैज़ाने सुन्नत है ? तो उन्हों ने नफ़ी में जवाब दिया। इस पर मैं ने ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' का इज्माली तआ़रुफ़ पेश किया कि येह एक वलिय्ये कामिल की तालीफ़ है जो कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे ''मक-त-बतुल मदीना'' से हदिय्यतन ह़ासिल की जा सकती है लिहाज़ा आप ज़रूर इस का मुता-लआ़ फ़रमाएं, उस के हामी भरने पर मैं ने उसे चन्द रसाइले अ़त्तारिय्या तोह़फ़े में दिये और फिर हम उस के घर से रुख़्सत हो गए। काफ़ी अ़र्से बा'द हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से उस नौ जवान से मुलाक़ात हुई तो ह़स्बे साबिक़ वोह फिर मुझे अपने घर ले गया, अब की बार मैं ने उस के कमरे में ''**फ़ैज़ाने**

सुन्नत'' रखी देखी उस ने बताया कि आप के तरग़ीब दिलाने पर मैं ने येह किताब ख़रीदी है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस का मुता़-लआ़ करने की सआ़दत भी ह़ासिल कर रहा हूं, येह सुन कर मेरा दिल बाग़ बाग़ हो गया। ''**फ़ैज़ाने सुन्नत'' के मुता़-लए़ की ब-र-कत से अ़क़ाइदे अहले सुन्नत के मु-तअ़ल्लिक़ उस के दिल में जो मैल था न सिर्फ़ वोह दूर हो गया** बल्कि उस के दिल में शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़क़ीदत ऐसी घर कर गई कि वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद हो कर नमाज़ रोज़े का पाबन्द बन गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ मेरी तिश्नगी दूर हो गई

सादिक़आबाद (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : बचपन ही से मुझे येह शौक़ था कि मैं अपने प्यारे नबी, मक्की म-दनी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ढेरों सुन्नतें सीखूं। इस मुक़द्दस शौक़ की तक्मील के लिये मैं किसी ऐसी किताब की तलाश में था जिस से मेरी तिश्नगी दूर हो सके। एक मरतबा एक मुअ़म्मर (बड़ी उ़म्र वाले) इस्लामी भाई ने मेरे सामने ह़सीन पैराए में ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' नामी किताब का ज़िक्र किया जिस से मुझे उस के मुता़-लए़ का इश्तियाक़ हुवा तलाशे बिस्यार के बा'द बिल आख़िर मुझे येह किताब दस्त-याब हो ही

गई, जब इस का मुता़-लआ़ किया तो येह जान कर मेरी ख़ुशी व मुसर्रत की इन्तिहा न रही कि इस किताब में ख़ौफ़े ख़ुदा, इ़श्के़ मुस्त़फ़ा के साथ साथ ढेरों सुन्नतों का ज़ख़ीरा मौजूद था मैं वक़्तन फ़ वक़्तन इस का मुता़-लआ़ करता रहा और जो कुछ इस से सीखता इस पर न सिर्फ़ ख़ुद अ़मल करता बल्कि दूसरों को भी सिखा कर उन्हें शाहराहे सुन्नत पर गामज़न करने के लिये कोशां रहता। कुछ अ़र्से बा'द मेरा बाबुल मदीना (कराची) जाना हुवा तो सोचा क्यूं न उस अ़ज़ीम हस्ती की ज़ियारत की जाए जिस ने येह मायानाज़ किताब लिखी है लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** पहुंच कर शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीदार से फ़ैज़याब हुवा और आप की ज़ियारत की ब-र-कत से सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। एक रात सोया तो ख़्वाब में क्या देखता हूं कि वालिदे मर्हूम एक नह्र के कनारे टहल रहे थे मुझे देख कर यूं गोया हुए **''बेटा मुझे तेरा काम बहुत पसन्द है''** इस मुबारक ख़्वाब की बदौलत मुझे इस म-दनी माह़ोल में मज़ीद इस्तिक़ामत मिली और अ़मल का जज़्बा पैदा हो गया ता दमे तह़रीर मैं ज़ैली मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से म-दनी कामों में मसरूफ़ हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ इस्लामी ज़िन्दगी की राहनुमा तह़रीर

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई ने एक म-दनी बहार बयान की जिस का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : सि. 1410 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 1990 ई. की बात है कि मैं मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में मुला-ज़मत करता था। एक रोज़ वहां काम के सिल्सिले में एक नए इस्लामी भाई आए जो दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे। एक बार मैं ने उन से कहा कि किसी ऐसी किताब की त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाएं जिसे पढ़ कर इस्लामी त़र्ज़ पर ज़िन्दगी गुज़ारी जा सके। उन्हों ने कहा कि आप दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" ख़रीद फ़रमा लीजिये, बहुत अच्छी किताब है। ज़िन्दगी का पहिया इसी तेज़ रफ़्तारी से घूमता रहा गर्दिशे लैलो नहार से बे ख़बर मैं मा'मूल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा और दुन्यावी मसरूफ़िय्यत की वजह से वोह किताब न ख़रीद सका, कुछ अ़र्से बा'द ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि मैं मुस्तक़िल त़ौर पर बाबुल मदीना (कराची) शिफ़्ट हो गया। एक रोज़ नमाज़े मग़रिब की अदाएगी के लिये एक मस्जिद में गया तो नमाज़ अदा

करने के बा'द मैं ने देखा कि सफ़ेद लिबास ज़ैबे तन किये सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाए एक इस्लामी भाई दर्स दे रहे थे और कई इस्लामी भाई उन के इर्द गिर्द निहायत मुनज़्ज़म अन्दाज़ में बैठे इन्तिहाई यक्सूई के साथ दर्स सुनने में मसरूफ़ थे। मैं बहुत मु-तअस्सिर हुवा और अदब से सर झुकाए मैं भी उस दर्स में बैठ गया। जब मेरी नज़र उस किताब पर पड़ी जिस से वोह इस्लामी भाई दर्स दे रहे थे तो उस पर "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" लिखा था जिसे देख कर मेरा ज़ेह्न माज़ी के धुंदलकों में खो गया और मेरे ज़ेह्न के निहां ख़ानों में येह बात इ़यां हो गई कि मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में जिस इस्लामी भाई से मेरी मुलाक़ात हुई थी उन्हों ने मुझे इसी किताब को ख़रीदने का मश्वरा दिया था। दर्स के बा'द मैं ने इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात की और उन से फ़ैज़ाने सुन्नत मुता़-लआ़ करने के लिये ले ली। इस ख़ूब सूरत तह़रीर के हर एक पैराए से वाक़िअ़तन सुन्नतों का फ़ैज़ान झलक रहा था, अन्दाज़े तह़रीर निहायत सादा और आ़म फ़ह्म कि पढ़ने वाला बहूरे अल्फ़ाज़ में ग़ोता़ज़न हो कर मआ़नी के भंवर में फंसे बिग़ैर निहायत आसानी से मक़्सूद के मोतियों तक रसाई पा सकता है। इस किताब में प्यारे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने की और अह़कामे इलाहिय्यह की बजा आ-वरी की तरग़ीब इस क़दर प्यारे अन्दाज़ में दी गई थी कि سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ। इन सब चीज़ों ने मेरे ज़ेह्न पर

इन्तिहाई गहरे नुक़ूश मुरत्तब किये, रफ़्ता रफ़्ता मैं दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा माहौल से वाबस्ता हो गया और नेकियों के लिये कमर बस्ता हो गया। नीज़ मेरे साथ साथ मेरे तीन भाई भी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल से वाबस्ता हो चुके हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ मुरझाई कलियां खिल उठीं

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं मुआ़-शरे का एक बिगड़ा हुवा फ़र्द था। सोहबते बद की बदौलत गुनाहों की बोहतात (कसरत) दिन ब दिन दिल को सियाह से सियाह तर करती जा रही थी डायजेस्ट और नाविल पढ़ने का शौक़ तो इस हद तक था कि कभी कभी रात भर डायजेस्ट पढ़ता रहता था, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने की ऐसी लत पड़ी हुई थी कि इन के बिग़ैर नींद ही न आती थी नीज़ इन्टर नेट पर ह़यासोज़ मनाज़िर देख देख कर अपनी फूल सी जवानी को ख़ज़ां के तुन्दो तेज़ थपेड़ों के सिपुर्द करने में मसरूफ़ था। मेरी इन ह़-र-कतों और बद आ'मालियों की वजह से क्या अहले ख़ाना और क्या रिश्तेदार सभी मुझ से बेज़ार थे। मेरी बिगड़ी ज़िन्दगी कुछ इस त़रह़ संवरी कि एक रात मैं अपनी ख़ाला के घर वक़्त गुज़ारी के लिये किसी नाविल की तलाश में था कि अचानक मेरी नज़र एक ज़ख़ीम किताब पर पड़ी जिस पर

''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' लिखा हुवा था मैं ने उस किताब को उठा कर पढ़ना शुरूअ़ कर दिया । प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के वाक़िआ़त और दीगर अहम व दिलचस्प मा'लूमात के सबब मुझे येह किताब बहुत भली लगी लिहाज़ा मैं ख़ाला से इजाज़त ले कर वोह किताब घर ले आया और उस को वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ने लगा जिस की ब-र-कत से मेरे दिल की मुरझाई कलियां खिल उठीं और मुझ में मुस्बत तब्दीलियां रूनुमा होती गईं । तमाम गुनाहों से तौबा कर के सौमो सलात और ज़िक्रो दुरूद का पाबन्द हो गया, सुन्नतों भरी इस किताब ने मेरी ज़िन्दगी को भी सुन्नतों के सांचे में ढाल दिया और मुझे सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न कर दिया था । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मैं अ़लाक़ाई सत्ह़ पर ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हूं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿ गाने सुनने से तौबा

ख़ानपूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने एक मज़्हबी घराने में आंख खोली, वालिदे मोह़तरम नमाज़ी होने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे और दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ इज्तिमाआ़त में भी शिर्कत किया करते थे वालिद साह़िब

की शफ़्क़तों की वजह से हमें भी नमाज़ की अदाएगी की सआ़दत ह़ासिल हो जाती थी मगर मेरी बद क़िस्मती कि मैं उन से छुप कर फ़िल्में देखता और गाने सुनता था। एक रोज़ मैं ने घर में वालिद साहिब को शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तालीफ़ **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** का मुत़ा-लआ़ करते पाया। उन के मुत़ा-लआ़ करने के बा'द मैं ने फ़ैज़ाने सुन्नत को पढ़ना शुरूअ़ किया तो मुझे इस बात का अन्दाज़ा हुवा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से किस क़दर मह़ब्बत करते हैं। मज़ीद मुत़ा-लआ़ किया तो मेरी नज़र से ऐसी रिवायात भी गुज़रीं कि जिन में बद निगाही के होलनाक और दर्दनाक अ़ज़ाबात का तज़्किरा था इन रिवायात को पढ़ कर मेरा अंग अंग ख़ौफ़े ख़ुदा से कांपने लगा और उसी दिन मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ा कर **फ़िल्में देखने और गाने सुनने से सच्ची तौबा कर ली** और अब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया हूं और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत को अपना मा'मूल बना चुका हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ सोज़े इ़श्क़े मुस्त़फ़ा

बरनाला (कशमीर) के एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल बद क़िस्मती से मेरा रुज्ह़ान बद मज़्हबों की त़रफ़ था कि जिन्हों ने मेरे अ़क़ाइदे सह़ीह़ा में रख़्ना अन्दाज़ियां कर के मुझे राहे रास्त से भटका दिया था, अ़क़ाइद की इन गुम गुश्ता राहों में मुझे निशाने मन्ज़िल कुछ यूं मुयस्सर आया कि एक मरतबा मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत का इत्तिफ़ाक़ हुवा तो इस माह़ोल से मुझे बहुत लुत़्फ़ो सुरूर मिला इज्तिमाअ़ में एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने दौराने बयान "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" नामी किताब के ह़वाले से "जूनागढ़" के एक आ़शिक़े रसूल का वाक़िआ़ सुनाया, इ़श्क़ो मह़ब्बत की वोह दास्तां मेरे जिस्मो जां में ताज़गी ले आई क्यूं कि लिखने वाले ने वोह वाक़िआ़ इस क़दर वालिहाना अन्दाज़ में लिखा था कि तह़रीर के मोतियों ही से उन के दिल में छुपे गोहरे इ़श्क़ की अ़क्कासी होती थी और उन अल्फ़ाज़ की तासीर थी कि ज़िन्दगी में पहली बार मैं ने अपने अन्दर आ-तशे इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की तपश मह़सूस की थी मैं ने उस किताब के बारे में मा'लूमात ह़ासिल कीं तो पता ला कि वोह शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना

अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ व मश्हूरे ज़माना तालीफ़ है, मेरे दिल में उन की ग़ाइबाना अ़क़ीदत पैदा हो गई और मैं दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आने जाने लगा और यूं मेरे दिल में बद मज़्हबों से नफ़रत और आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा से महब्बत दिन ब दिन ज़ोर पकड़ती गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया, मेरी ख़्वाबीदा क़िस्मत जाग उठी और मुझे ह़ुसूले इ़ल्मे दीन की तौफ़ीक़ नसीब हो गई । आज बि फ़ज़्लिही तआ़ला दर्से निज़ामी के त़ालिबे इ़ल्म की ह़ैसिय्यत से इ़ल्मे दीन के मोती चुनने में मसरूफ़ हूं और तन्ज़ीमी त़ौर पर डिवीज़न सत़्ह़ पर मजलिसे ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या में अपनी ख़िदमात पेश कर के दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की तरक़्क़ी के लिये कोशां हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

⟪9⟫ तारीकी के बादल छट गए

इस्लामआबाद (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : येह उन दिनों की बात है कि जब मैं ज़ियाकोट (सियाल कोट) में एक इलेक्ट्रिक वर्क शॉप पर काम सीखता था । मेरे साथ काम करने वालों में से दो अफ़राद ऐसे भी थे जिन का तअ़ल्लुक़ बद मज़्हबों से था । मैं रफ़्ता रफ़्ता उन के दामे फ़रेब में फंसता चला गया और एक वक़्त वोह आया कि जब

मेरे दुरुस्त अ़क़ाइद की इ़मारत बिल्कुल मिस्मार हो गई। ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि एक रात सोया हुवा था कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, सर की आंखें तो क्या बन्द हुईं दिल की आंखें खुल गईं, क्या देखता हूं कि मेरे सामने मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जल्वा फ़रमा हैं मैं ने शरबते दीदार से अपनी आंखों की प्यास बुझाई कुछ देर बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस ज़ियारत की ब-र-कत से दिल का ज़ंग दूर हो गया आने वाले र-मज़ानुल मुबारक में मुझे सुन्नते ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल हुई तो दौराने ए'तिकाफ़ इमाम साह़िब ने एक किताब बनाम **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** का तआ़रुफ़ पेश करते हुए तमाम **मो'तकिफ़ीन** को इस के पढ़ने की तरग़ीब दिलाई तो मेरे अन्दर भी जज़्बा बेदार हुवा और मैं ने इस किताब का मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से मेरे दिल में इ़श्क़े रसूल का चराग़ रोशन हो गया और साथ ही साथ आक़ाए दो जहान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ढेरों सुन्नतें और दीनी मा'लूमात भी ह़ासिल हुईं। मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया और आहिस्ता आहिस्ता मैं ने अपने आप को सुन्नतों के सांचे में ढाल लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर अ़लाक़ाई मुशा-वरत के

ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से म-दनी कामों में मसरूफ़ हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ बे क़रारियों को क़रार आ गया

अटक (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि : बुरे माहोल और बुरी सोहबत की वजह से मैं मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बुराइयों का आ़दी हो चुका था और कस्रते इ़स्यां की वजह से मेरा दिल सियाह होता जा रहा था। बुराइयां इस क़दर बढ़ चुकी थीं कि अपने आप से नफ़रत होने लगी थी बसा अवक़ात तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करता कि या इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझे नेक माहोल अ़ता फ़रमा **आख़िर कार एक रोज़ मेरी मुराद बर आई**, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करना कुछ ऐसा हुवा कि मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से मुन्सलिक एक इस्लामी भाई से हुई तो मैं ने उन के सामने किसी इस्लामी किताब के पढ़ने का शौक़ ज़ाहिर किया तो उन्हों ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ बनाम **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** पढ़ने के लिये दी, इस क़दर दिलचस्प और मा'लूमाती किताब मैं ने अपनी ज़िन्दगी में कभी न पढ़ी थी मैं ने सिर्फ़ और सिर्फ़ 21 दिन के अन्दर इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ कर लिया इस की

पुर असर तह़रीर ने मेरे दिल की दुन्या बदल डाली, मैं ने दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लिया और फिर आहिस्ता आहिस्ता गुनाहों से छुटकारा नसीब होने लगा बिल आख़िर मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया । चेहरे पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी मुबा-रका और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सज गया और मुझे नेकी की दा'वत की धूम मचाने और सुन्नतें आ़म करने की अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल हो गई । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मैं अपने दिल में सुकून की दौलत पाता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ आंखें अश्क बरसाती रहीं

मुज़फ़्फ़र गढ़ (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : मैं इन्तिहाई बद अख़्लाक़ व बद किरदार था, तर्के नमाज़ का आ़दी होने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ गुनाहों के अमराज़ में गरिफ़्तार था । मज़ीद बर आं बद अ़क़ी-दगी का ख़ौफ़ भी दामन गीर था क्यूं कि हमारे अ़लाक़े में बद मज़्हब बद अ़क़ी-दगी फैलाने के लिये आया करते और मुसल्मानों के

ईमान छीनने के दर पै होते, मेरी ख़ुश नसीबी कि एक अ़ज़ीज़ ने मुझे एक किताब बनाम **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** दी और उस को पढ़ने की ताकीद भी की। जब मैं ने इस किताब का मुत़ा-लआ़ किया तो यक़ीन कीजिये कि **इ़श्क़ो महब्बत से मा'मूर और पन्दो नसीह़त से भरपूर इस तह़रीर को पढ़ कर अश्के नदामत का सैलाब पलकों का बन्द तोड़ता हुवा आंखों से जारी हो गया** और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की महब्बत व अ़क़ीदत मेरे दिल में घर करती गई। इस किताब से मा'लूम हो रहा था कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर्द गार ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस क़दर वालिहाना प्यार है कि इस किताब में जहां भी म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर आया निहायत अदब से ज़िक्र फ़रमाया मैं इन से बेह़द मु-तअस्सिर हुवा और इन की ज़ियारत का शौक़ मुझे बाबुल मदीना (कराची) खींच लाया, वहां पहुंच कर एक इस्लामी भाई के हमराह मैं आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना आया और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत के साथ साथ मुलाक़ात व दस्त बोसी का शरफ़ भी पाया और आप के

ज़रीए सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक सच्चे आ़शिक़े रसूल ही नहीं बल्कि वलिय्ये कामिल भी हैं क्यूं कि येह एक वलिय्ये कामिल ही की तो नज़रे विलायत का नतीजा है कि मेरे जैसा गुनाहगार गुनाहों से बेज़ार हो कर आज सौमो सलात का पाबन्द बन चुका है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ वालिदैन का इ़ताअ़त गुज़ार बन गया

बरेली शरीफ़ (हिन्द) के अ़लाक़े शीशगढ़ में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : मैं गुनाहों की तारीक वादियों में भटक रहा था, नेकियों से कोसों दूर, गुनाहों से भरपूर ज़िन्दगी गुज़ार रहा था। **नमाज़ों में सुस्ती करने, दाढ़ी मुंडवाने और नित नए फ़ेशन अपनाने के साथ साथ बहन भाइयों को बिला वजह डांट डपट और वालिदैन से तल्ख़ कलामी भी मेरे मा'मूलात का हिस्सा बन चुके थे।** इ़लावा अज़ीं फ़िल्में डिरामे देखने का भी शौक़ीन था, मेरी ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी में बहार यूं आई कि ख़ुश क़िस्मती से मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मायानाज़ तालीफ़ **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** का मुत़ा-लआ़ करने का इत्तिफ़ाक़ हुवा। इस किताब की पुर तासीर तह़रीर ने मेरे अन्दर गोया एक नई रूह़ फूंक दी मैं अपने साबिक़ा

गुनाहों पर अश्के नदामत बहा कर रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बख़्शिश व मग़्फ़िरत का त़ालिब हुवा और आइन्दा गुनाह न करने का अ़ज़्म बिल जज़्म किया। ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने सुन्नत की ब-र-कत से न सिर्फ़ नमाज़ों की पाबन्दी नसीब हो गई है बल्कि मैं ने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली और फ़िल्मों डिरामों की नुहूसत से भी नजात मिल गई नीज़ बहन भाइयों के साथ शफ़्क़त का बरताव करने वाला और वालिदैन का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन गया हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ बुग़्ज़ व अ़दावत की आग बुझ गई

सख़्खर (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे वालों को देख कर न जाने क्यूं बुग़्ज़ व ह़सद की एक आग मेरे सीने में भड़क उठती और मैं उन के क़रीब न जाता। फिर एक दिन वोह आया कि मैं ख़ुद इसी म-दनी माह़ोल का हो कर रह गया, मेरी ज़िन्दगी में येह तब्दीली इस त़रह़ रूनुमा हुई कि एक मरतबा मुझे "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" पढ़ने का मौक़अ़ मिला तो दौराने मुत़ा-लआ़ इस किताब के एक बाब "**फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह**" में जब मैं ने वोह ह़िकायत

पढ़ी जिस में इस बात का ज़िक्र था कि "**बिस्मिल्लाह**" की ब-र-कत से एक लड़की की जान ज़ाएअ़ होने से बच गई तो मैं हैरान रह गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम में इस क़दर तासीर है मज़ीद इस किताब को जैसे जैसे पढ़ता गया दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की महब्बत मेरे दिल में पैदा होती गई और नेकियों का ज़ेहन बनता गया चुनान्चे मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया इसी म-दनी माहोल की ब-र-कत से मैं ने जामिअ़तुल मदीना में **दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) के लिये दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्से निज़ामी मुकम्मल करने के बा'द दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में मसरूफ़ हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ गुलशने ह़यात को शादाब कर दिया

गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा, पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : इस म-दनी माहोल से क़ब्ल मैं बहुत ही बिगड़े हुए किरदार का मालिक था नीज़ क़ुरआनो सुन्नत पर अ़मल पैरा होने से यक्सर महरूम था ज़िन्दगी इन्ही पुरपेच और तारीक राहों में भटक्ते हुए गुज़र रही थी, बिल आख़िर येह बे राह-रवी और ज़ुल्मत व तारीकी काफ़ूर हुई

और वोह इस त़रह़ कि मुझे शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तालीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" ह़ासिल हो गई, मैं वक़्तन फ़ वक़्तन इस का मुत़ा-लआ़ करता रहा और यूं दिन ब दिन मेरे अख़्लाक़ में निखार आता गया और नेकियां करने का जज़्बा भी दिल में बेदार होता गया बिल आख़िर मैं गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया और आज मुझे येह बताते हुए इन्तिहाई ख़ुशी हो रही है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं दा'वते इस्लामी के शो'बए ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या में अपनी ख़िदमात पेश कर रहा हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾15﴿ दाढ़ी नहीं कटवाऊंगा

सखर (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी की एक बहार बयान फ़रमाते हैं जिस का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : मैं कुफ़्र की तारीकियों में भटक रहा था, येह शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1418 हि. ब मुत़ाबिक़ दिसम्बर सि. 1997 ई. की बात है कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का एह़साने अ़ज़ीम कि उस ने मुझ गुनाहगार को दौलते ईमान से सरफ़राज़ फ़रमाया कि मैं ने एक आ़लिमे दीन के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। मगर दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने के बा'द मैं इस शशो पन्ज में

मुब्तला हो गया कि इस्लाम का दा'वेदार हर फ़िर्क़ा अपने आप को अहले ह़क़ गरदान्ता है तो आख़िर इन में से ह़क़ पर कौन है ? मेरी ख़ुश नसीबी कि मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया, इस माह़ोल से वाबस्तगी के बा'द मैं ने अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शोह्रए आफ़ाक़ तालीफ़ **''फ़ैज़ाने सुन्नत'' का मुत़ा-लआ़ किया तो बे साख़्ता मेरे दिल में अहले सुन्नत व जमाअ़त की मह़ब्बत घर कर गई और मुझ पर येह वाजे़ह़ हो गया कि अहले सुन्नत ही अहले ह़क़ हैं ।** इस किताब के पुर तासीर अल्फ़ाज़ की ब-र-कत से मैं सुन्नतों का पाबन्द होता गया । मैं ने चेहरे पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबा-रका (दाढ़ी शरीफ़) भी सजा ली और अ़ह्द किया कि अब ख़्वाह मेरी गरदन कट जाए मगर मेरी दाढ़ी नहीं कटेगी । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना (सख्खर) में नाज़िमे जद्वल की ह़ैसिय्यत से ख़िदमात सर अन्जाम दे रहा हूं दुआ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप भी म–दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाता है । इसी त़रह़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जग–मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है । आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म–दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **म–दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللہعَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी ।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसिट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इ़मामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौ़र पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्ह़ूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़ह़े पर वाक़िए की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **''शो'बए अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अह़मद आबाद गुजरात''**

नाम मअ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं..... ख़त़ मिलने का पता.....

फ़ोन नम्बर (मअ़ कोड) :..... ई मेइल एड्रेस .....

इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी.....

मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फ़ुलां फ़ुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़ह़े पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो़ ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद, शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने, अह़मद आबाद गुजरात''** के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्त़ारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : Attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।